चली आयी कीर्ति या अपकीर्ति से प्रभावित न होते हों। हमें अपनी वंशावलियों को जानने में गर्व का अनुभव होता है। लम्बी वंशावली प्रतिष्ठा की सूचक है और कई बार लोग इस बात को लेकर शेखी भी बघारते हैं। ऐसा करने से उन्हें मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की भावना प्राप्त होती है और वंश-कुल की निश्चितता का अनुभव होता है। वे यह महसूस करते हैं कि वे गुमनाम नहीं है, इतिहासविहीन नहीं हैं, उनकी भी जड़ें हैं।

वर्तमान युग में ये भावनाएं चाहे उचित या व्यावहारिक महत्व की नहीं हों, फिर भी अधिकांश भागों में ये अधिक महत्वपूर्ण रही हैं और आज भी हैं। आदिम और आधुनिक समाजों में पूर्वजों तथा नातेदारों के साथ सम्बन्ध सामाजिक संरचना के मूलभूत आधार रहे हैं। वे धुरी के समान हैं जिन पर अधिकांश पारस्परिक क्रियाएं, दावे एवं दायित्व, निष्ठाएं तथा मनोभाव घूमते हैं। जिन समाजों में नातेदारी को अधिक महत्व दिया जाता है, वहां नातेदारी के प्रति निष्ठावान होने को प्रमुखता दी जाती है। वर्तमान वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिक एवं नौकरशाही समाजों में हम एक व्यक्ति से यह यह अपेक्षा करते हैं कि वह नातेदारी के बजाय अपने पद व राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हो, लेकिन नातेदारी दुराग्राही है। नौकरशाही का तर्क नातेदारी की निष्ठाओं से हार जाता है और एक व्यक्ति किसी भी स्थान के चयन के लिए योग्यता की तुलना में नातेदारी व भाई-भतीजावाद को अधिक महत्व देता है। साधारणतः लोग ऐसा मानते हैं कि दुर्दिन आने पर नातेदार ही हमारी सहायता करेंगे चाहे वस्तुस्थिति इतनी सही न हो। एक पुरानी कहावत है "खून पानी से गाढ़ा होता है।"

यह प्रश्न किया जा सकता है कि आखिर मनुष्य का अपने नातेदारों से इतना लगाव क्यों है? इसका एक सम्भावित उत्तर यह है कि मानव विकास की एक लम्बी अवधि तक उन समाजों में रहा है जिनका आधार नातेदारी पर बने समूह थे। एक व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक सुरक्षा तथा उसका जीवन नातेदारों के हाथ में था। नातेदारी-विहीन व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठाहीन या मृतक के समान ही माना जाता था। हम परिचितों पर ही अधिक विश्वास करते हैं और नातेदारों से अधिक परिचित और कौन हो सकता है? विज्ञान ने चाहे आज कितनी ही प्रगति करली हो, परन्तु कोई भी समाज अपने को नातेदारी के बन्धनों से पूर्णतया मुक्त नहीं कर पाया है। **हक्सले** ने **'ब्रेव न्यू वर्ल्ड'** (Brave New World) में यह कल्पना की है कि भविष्य में बोतलें माताओं का स्थान ग्रहण कर लेंगी। जब तक उसकी यह कल्पना साकार नहीं होती तब तक नातेदारी के सम्बन्ध त्यागे नहीं जा सकते।

उपर्युक्त संदर्भ में हम कह सकते हैं कि नातेदारों का प्रत्येक समाज में बहुत महत्व है। संगम (mating), गर्भावस्था, पितृत्व, समाजीकरण, सहोदरता, आदि जीवन के मूलभूत तथ्यों के साथ मानव-व्यवहार का अध्ययन ही नातेदारी का अध्ययन है। मनुष्य समाज में जन्म के बाद से ही अनेक लोगों से सम्बन्धित हो जाता है। इन सम्बन्धों में रक्त एवं विवाह के आधार पर बने सम्बन्ध अधिक स्थायी एवं घनिष्ठ होते हैं। सम्बन्धों का निर्माण मानव द्वारा की जाने वाली सामाजिक अन्तःक्रिया का ही परिणाम है। जिन विशिष्ट सामाजिक सम्बन्धों द्वारा मनुष्य बंधे होते हैं और जो सम्बन्ध समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं, उन्हें हम नातेदारी के अन्तर्गत सम्मिलित करते हैं। यहां हम नातेदारी की परिभाषा एवं व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।